इकाई 10 वर्गीय संरचना

इकाई की रूपरेखा

10.0 उद्देश्य

10.1 प्रस्तावना

10.2 वर्गीय संरचना का इतिहास

- 10.2.1 खेतिहर वर्गीय संरचना
- 10.2.2 औद्योगिक वर्गीय संरचना

10.3 वर्गीय संरचना के सिद्धान्त

- 10.3.1 मार्क्सवादी सिद्धान्त
- 10.3.2 वेबरवादी सिद्धान्त

10.4 नए विकासक्रम

10.5 सारांश

10.6 शब्दावली

10.7 कुछ उपयोगी पुस्तकें

10.8 बोध प्रश्नों के उत्तर

10.0 उद्देश्य

इस इकाई में वर्गीय संरचना के सिद्धान्तों और प्रक्रियाओं की विवेचना की गई है। इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आपः

- वर्ग शब्द के अर्थ को स्पष्ट कर सकेंगे;
- वर्गीय संरचना की प्रक्रिया को दिखा सकेंगे;
- वर्गीय संरचना के सिद्धान्तों को निरूपित और व्याख्यायित कर सकेंगे;
- नए विकासक्रमों की पहचान कर सकेंगे; तथा
- विभिन्न समाजों की वर्गीय संरचनाओं की तुलना कर सकेंगे।

10.1 प्रस्तावना

आम बोलचाल में हम वर्ग शब्द का प्रयोग अनेक अर्थों में करते हैं। हम उच्च, मध्य और निम्न वर्गों की, संपत्तिशाली और संपत्तिहीन वर्गों की, उत्पादक और अनुत्पादक वर्गों की, शिक्षित और अशिक्षित वर्गों की बात करते हैं। लेकिन इस संदर्भ में वर्ग शब्द लगभग अर्थहीन है; इससे सिर्फ यह पता चलता है कि व्यक्तियों के समूहों के पास कुछ साझी विशेषताएँ होती हैं। इस धारणा को एक निश्चित रूपरेखा तथा वैज्ञानिक उपयोगिता देने के लिए आवश्यक है कि **वर्ग** शब्द एक ऐसे समूह का सूचक हो जिसकी साझा विशेषताएँ पूरी तरह सुनिश्चित और पूर्व-निर्धारित हों।

वर्गों की धारणा का अनिवार्य तत्व क्या है, इस प्रश्न पर लिखने वाले लेखक मोटे तौर पर दो श्रेणियों में आते हैं -- एक तो वे जो **वस्तुनिष्ठ तत्वों** को वर्ग का आधार मानते हैं और वे जो **मनोनिष्ठ तत्वों** का चयन करते हैं। पहली श्रेणी में लेखक **उत्पादन के साधनों** के **स्वामित्व** या **अ-स्वामित्व** को वर्ग का आधार मानते हैं; यह धारणा मूलतः **मार्क्सवादी** है। दूसरे लेखक **सामान्य जीवन** स्तर पर जोर देते हैं; उनका कथन है कि आधुनिक समाज में वर्ग जिन तत्वों से बनता है वे किसी विशेष जीवन स्तर के अंदर सामान्यतः एक जैसे होते हैं। दूसरे वस्तुनिष्ठ तत्वों के चयन भी किए गए हैं। उदाहरण के लिए **मैक्स वेबर** ने वर्ग की धारणा के लिए (1) आर्थिक साधनों के स्वामित्व, (2) बाह्य जीवन स्तर तथा (3) सांस्कृतिक और मनोरंजन संबंधी संभावनाओं को आधार बनाया।

मनोनिष्ठवादियों के अनुसार वर्ग वे समूह हैं जिनकी **आय के स्रोत एक जैसे** होते हैं तथा जिनके **आर्थिक हितों में समानता** होती है। इस धारणा में मनोनिष्ठ तत्व हितों व दृष्टिकोणों का समुदाय है जिसकी जड़ें किसी विशेष काल के आर्थिक ढाँचे में होती हैं। इस दृष्टि में साझे हित, साझी विचारधारा, एकजुटता की साझी चेतना की प्रधानता होती है। दूसरे सिद्धांतकार किसी समूह को प्राप्त सम्मान के परिमाण को अनिवार्य मानते हैं और इस तरह वर्गों को मूलतः **प्रतिष्ठा पर आधारित** श्रेणीकरण बना देते हैं।

10.2 वर्गीय संरचना का इतिहास

आदिम समाजों में **धन के संग्रह** या **असाधारण हस्तकौशल** के प्रदर्शन के आधार पर, **पुश्तैनी अभिजात्य** और **पुरोहिती** के आधार पर कुछ व्यक्ति अक्सर बाकी समुदाय से अलग माने जाते थे; ये ही स्थितिगत पहचान के साझे आधार भी थे। **यूनान** और **रोम** में स्थितियों पर आधारित इस समाज से वर्गीय समाज में रूपांतरण सातवीं और छठी सदी ईसा-पूर्व में हुआ।

यूनान में पहला वर्ग संघर्ष भूस्वामी अभिजातों के विरोध में लड़ा गया। इस व्यवस्था में ऋण दासता का कारण बनता था और किसान वर्ग अभिजातों का भारी कर्जदार था। इसी संघर्ष ने सोलोन के विधान को जन्म दिया तथा नागरिकों के एक अत्याधिक व्यापक दायरे को राजनीतिक अधिकार और सार्वजनिक पद दिए गए। इन सुधारों ने भूस्वामी अभिजातों को उनकी वैधानिक मान्यता से वंचित कर दिया और इस तरह स्थिति के भेदों को वर्ग के भेदों में रूपांतरित कर दिया। **फारस** के साथ हुए युद्धों के बाद होने वाले **औद्योगिक** और **व्यापारिक विकास** क्रमों के साथ निजी संपत्ति अधिकाधिक महत्वपूर्ण होती गई और वर्गों के टकराव में उसी के अनुरूप परिवर्तन आए।

मूलतः इसी से मिलता-जुलता विकासक्रम **रोम** में हुआ। स्थिति के आधार पर **सामाजिक विभेदीकरण** हुआ। राजनीतिक शक्ति भूस्वामी अभिजातों के हाथों में केन्द्रित हो गई। उनके विरोध में **प्लेबियन समूह** खड़ा हुआ। हालांकि वे स्वतंत्र थे, पर उनको राजनीतिक अधिकार प्राप्त नहीं थे। यह व्यवस्था क्रमशः टूटी और वर्गों में विभेदीकरण का रास्ता तैयार हुआ। यह संक्रमण जब पूरा हुआ तो रोम के सामाजिक संगठन का विकास इस तरह जारी रहा कि वर्गीय ढाँचे की रूपरेखाएँ स्पष्ट होनी लगीं। अधिकतर युद्धों के कारण तथा दूसरे देशों से आने वाले अनाजों की प्रतियोगिता के कारण किसान वर्ग टूटने लगा। भूमि और जीविका से वंचित होकर किसान बड़े नगरों में आ पहुँचे। यहाँ वे एक विशाल **सर्वहारा** वर्ग के अंग बन गए जो सार्वजनिक दानों और खैरातों पर किसी तरह जी रहा था। इस तरह सुनिश्चित संपत्तिशाली वर्ग पैदा हुए और संपत्ति के वितरण में घोर असमानताएँ नजर आने लगीं।

मध्य युग में सामंती व्यवस्था स्थिति पर आधारित एक सामाजिक संगठन की सूचक थी। बाजार और व्यापार के लिए होने वाले उत्पादन का महत्व बढ़ा तथा **मौद्रिक अर्थव्यवस्था** का जन्म हुआ तो स्वतंत्र और कम स्वतंत्र के बीच श्रेणीकरण पैदा हुआ। न तो श्रेणियाँ स्थायी व अपरिवर्तित रहीं और न वर्ग रहे। वे उपसमूहों में विघटित होने लगे। इस तरह अस्वतंत्र लोगों के बीच भी श्रेणियाँ पैदा होने लगीं।

नगरों और व्यापार के विकास के साथ अभिजातों और किसानों के साथ **बर्गरों** का एक नया व्यावसायिक वर्ग भी पैदा हुआ। **पद** और **व्यवसाय** क्रमशः सामाजिक स्थिति का निर्धारण करने लगे। **जन्म** के आधार पर अत्यंत विविधि श्रेणियों के सदस्यों के लिए भी-- यहाँ तक कि अस्वतंत्र और स्वतंत्र व्यक्तियों के लिए भी -- ऊँचे सामाजिक स्तर तक पहुँचना संभव हुआ। इस नए तत्वों ने पुराने तत्वों को तुरन्त विस्थापित नहीं किया; दोनों अनेक सदियों तक साथ-साथ जारी रहे। जहाँ ये नए वर्ग व्यावसायिक थे, वहीं वे आरंभ से ही काफी बेलोच रहे। लेकिन संपत्ति और व्यवसाय जन्म और वंश के तत्वों को लगातार विस्थापित करते रहे।

यह **विकास** सभी यूरोपीय राज्यों में मूलतः एक जैसा था। फिर भी इसके ढंग और समय में अंतर थे। खासकर **इटली** के **नगर - राज्यों**, **इंग्लैण्ड** और **फ्रांस** में वर्गीय संगठन दूसरे देशों से पहले पैदा हुआ। इंग्लैण्ड में धनी सौदागर वर्ग 17वीं सदीं के अंत तक संसद में एक प्रभावशाली स्थान बना चुका था। फ्रांस में उन्हीं दिनों अनेक बर्गर ऊपर आकर कुलीन बन गए तथा 1715 के बाद तो वे कुलीन वर्ग की जागीरें खरीदने लगे।

10.2.1 खेतिहर वर्गीय संरचना

ऐतिहासिक रूप से अनेक देशों के ग्रामीण क्षेत्र आर्थिक और राजनीतिक शक्ति की घोर असमानताओं से ग्रस्त थे। भारी ग्रामीण आबादियों तथा प्राथमिक वस्तुओं का उत्पादन कर रही अर्थव्यवस्थाओं वाले अनेक देशों में ऐसी असमानताएँ दिखाई देती रहीं।

खेतिहर वर्ग व्यवस्थाओं की अनेक श्रेणियाँ हैं। गृह युद्ध से पहले अमेरिका में पाई जाने वाली **दास-प्रथा** इसका घोर रूप थी क्योंकि इसमें भूमि का स्वामित्व पूरी तरह एक प्रभुत्वशाली वर्ग तक सीमित था और एक पराधीन वर्ग के क्रम पर उसका पूर्ण नियंत्रण था। दूसरी श्रेणी **सामंती व्यवस्थाओं** की है जो मध्यकालीन यूरोप और उपनिवेशी लैटिन अमेरिका में पाई जाती थीं। ऐसी व्यवस्थाओं में भूस्वामी मुख्यतः अपनी स्थिति और शक्ति में वृद्धि के लिए **भूमि का संचय** करते हैं। वे भूमि पर एकाधिकार कायम करके एक स्थिर और भरोसे-योग्य **श्रम-बल** सुनिश्चित करते हैं। भूमि और श्रम पर नियंत्रण बनाए रखने के लिए ये भूस्वामी कर्जदारी, खुले बल प्रयोग, परंपरागत सामाजिक दायित्वों और सम्मान के मानकों का उपयोग करते हैं।

19वीं सदी के अंतिम भाग में दक्षिण-पूर्व एशिया उपनिवेशी क्षेत्रों में विकसित होने वाला **कृषक पूँजीवाद** इसकी एक **तीसरी श्रेणी** है। इसकी विशेषता बागान में उत्पादन है तथा यह पराधीन वर्गों पर प्रभुत्व बनाए रखने के लिए भूमि पर एकाधिकार का तथा दास-श्रम, बंधुआ श्रम या उज़रती श्रम (वेज़ लेबर) का उपयोग करता है। मैक्सिको और ब्राजील के कुछ भागों की तरह जहाँ बड़े पैमाने पर पूँजीवादी कृषि का विकास हुआ है वहाँ उत्पादक भूमि बड़े भूस्वामियों का एकाधिकार बन गई हैं तथा उजरती श्रम ने बंटाईदारी की जगह ले ली है। जहाँ छोटे पैमाने के पूँजीवादी फार्म बने हैं वहाँ भूमि और श्रम के बाज़ार अधिक मुक्त हैं तथा वहाँ बल प्रयोग कम होता है।

विशाल कृषि क्षेत्र वाले देशों के अधिकांश क्षेत्रों में पूँजीवाद कृषि में उत्पादन की प्रमुख

पद्धति बन चुका हैं। पूँजीवादी उत्पादकों ने उत्पादक भूमि की बड़ी-बड़ी जोतें बना ली हैं, यंत्रीकरण और दूसरी उन्नत प्रौद्योगिकियों के सहारे श्रम को विस्थापित किया है। वे अब एक बसा-बसाया श्रम बल बनाने की बजाय व्यस्त दिनों में ही किराये पर मज़दूर रखते हैं। इस प्रक्रिया के अनेकों परिणाम निकले हैं। छोटे भूस्वामियों के लिए उपजाऊ भूमि अधिक दुर्लभ हो गई है, ग्रामीण निर्धनों में भूमिहीनता बढ़ी है तथा उजरती मज़दूर अधिक गतिशील और असुरक्षित हो गए हैं। यह भी आशा की जा रही थी कि इस प्रक्रिया के फलस्वरूप छोटे भूस्वामी और किसान समुदाय अंततः नष्ट हो जाएँगे, भूमि से अलग कर दिए जाएँगे तथा एक ग्रामीण या नगरीय श्रम बल के अंग बन जाएँगे।

लेकिन छोटे भूस्वामियों व किसान समुदायों ने पूँजीवाद के प्रसार के बीच जीवित रहने की भारी क्षमता दिखाई है। परिवार के स्तर पर छोटे भूस्वामियों ने अपनी आय के स्रोतों का विविधीकरण किया है। उत्पादन या विपणन के लिए साथ मिलकर कुछ तो पूँजीवादी उत्पादकों से भी मुकाबला कर रहे हैं। कुछ मिसालों में ग्रामीण उत्पादकों ने सहकारी समितियाँ आदि बना ली हैं जो उन्हें बाज़ारों के लिए बड़े भू-स्वामियों से प्रतियोगिता में समर्थ बनाती है।

दूसरे विश्वयुद्ध के बाद के दशकों में राज्य का प्रसार खेतिहर वर्गीय संरचना को प्रभावित करने वाला एक और विकासक्रम है। ग्रामीण क्षेत्रों में राज्य, स्थानीय कृषि अनुसंधान संस्थान, विपणन की एजेंसी, ग्रामीण ऋण बैंक, उचित मूल्य की दुकान, विद्यालय, दवाखाना, लोक निर्माण कार्यालय व अन्य संस्थानों के रूप में मौजूद है। ग्रामीण क्षेत्रों में राज्य का काफी कुछ हस्तक्षेप वस्तुओं या सेवाओं के रूप में होता है जो चुनिंदा व्यक्तियों, समूहों या समुदायों को प्रदान किए जाते हैं। खुली और लोकतांत्रिक दलीय प्रतियोगिता की स्थितियों में राजनीतिज्ञ कभी-कभी खेतिहर सुधार और ग्रामीण विकास की नीतियाँ अपनाने का वादा करके या ऐसी नीतियों को बढ़ावा देकर ग्रामीण समूहों का समर्थन पाने की प्रतियोगिता करते हैं। फलस्वरूप आज ग्रामीण वर्गीय संरचना भूस्वामित्व और श्रम के उपयोग के प्रतिमानों से अधिक कुछ बातों से भी निर्धारित होती दिखाई देती है। यह ग्रामीण भूस्वामियों और विकासकारी राज्य के बीच के शक्ति-संबंधों से तथा राष्ट्रीय राजनीतिक प्रणालियों में पराधीन वर्गों के एकीकरण के तरीकों पर भी निर्भर होती है।

10.2.2 औद्योगिक वर्गीय संरचना

पिछले उपभाग में हमने ग्रामीण क्षेत्रों में हो रहे परिवर्तनों के बारे में पढ़ा। इस उपभाग में हम नगरों की सामाजिक और आर्थिक संरचनाओं में हो रहे परिवर्तनों का अध्ययन करेंगे। 19वीं सदी के आरंभ में ही धन के वितरण में हो रहे परिवर्तन वर्गीय संरचना को निर्धारित करने लगे थे। पूँजीवाद और बड़े पैमाने के उद्योगों के विकास के साथ आर्थिक तत्व-- मुख्यतः संपत्ति का स्वामित्व -- ने वर्गीय सदस्यता के निर्धारण में पहले से बड़ी भूमिका निभाई। सामाजिक तत्व लगभग पूरी तरह आर्थिक तत्वों पर आधारित थे।

19वीं सदी के अंतिम और 20वीं सदी के प्रारंभिक भागों में रूस, फिनलैण्ड और जर्मनी जैसे निरंकुश समाजों में अत्यंत तीखे वर्ग संघर्ष चले जहाँ अभिजात वर्गों ने विरोध का दमन करके अपनी शक्ति को मज़बूत बनाने के प्रयास किए।

इसके विपरीत इंग्लैण्ड और स्विट्जरलैण्ड जैसे सुस्थापित उदार स्वतंत्रताओं और प्रभावी प्रतिनिधिक संस्थाओं वाले देशों में वर्ग संघर्ष कम हिंसक रहा। इन देशों में मज़दूरों को मताधिकार मिलने से उनमें सामाजिक और राजनीतिक संबद्धता की अधिक भावना पनपी। राजनीतिक संगठन और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता ने मज़दूरों को वैध उपायों से अपनी माँगें मनवाने के लिए दबाव डालने का अवसर दिया।

दूसरे विश्वयुद्ध के बाद के दौर में काम की दशाओं में सुधार और राजनीतिक एकीकरण के फलस्वरूप अधिकांश पाश्चात्य समाजों में औद्योगिक टकराव में सार्थक कमी आई। **कीन्ज़** के 'मांग के प्रबंध' पर आधारित सुधारों, नए और विस्तारित कल्याण कार्यक्रमों तथा मज़दूरी की मांगों और मुद्रा स्फीति पर अंकुश लगाने के लिए तैयार की गई सहमतिमूलक नीतियों ने वर्गीय संरचना पर स्पष्ट प्रभाव डाले।

लेकिन विश्वयुद्ध के बाद के ये विकास क्रम अलग-अलग देशों में, अलग-अलग सीमाओं तक हुए। वर्गीय सहमति आदि और मध्य यूरोप में सबसे अधिक तथा दक्षिणी यूरोप और आंग्ल-अमेरिकी लोकतंत्रों में सबसे कम रही। सत्तरोत्तरी दशक के अंत तक उत्तरी तथा मध्य यूरोप में, खासकर स्वीडेन, नार्वे, आस्ट्रिया में (तथा बेल्जियम, लुक्जेमबर्ग और नीदरलैण्ड में भी) श्रम बाज़ार में मज़दूर वर्ग का संगठन ज़ोरदार था। इन देशों में समाजवादी पार्टियाँ नियमित रूप से सरकारों में भी भाग लेती रहीं। इस भागीदारी ने ट्रेड यूनियनों को एक राजनीतिक अवसर दिया कि वे राज्य की अनुकूल कार्रवाई के बदले श्रम-बाज़ार में अपनी माँगों में नर्मी लाएँ। यूनियनों के लिए कानूनी संरक्षण, पूर्ण रोज़गार की आर्थिक नीतियों तथा कल्याणकारी व समतावादी सामाजिक नीतियाँ इस कार्रवाई में शामिल थीं।

बोध प्रश्न 1

टिप्पणीः क) नीचे दिए गए स्थान में अपने उत्तर लिखिए।

ख) इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों के साथ अपने उत्तरों को मिलाइए।

1) वर्ग के वस्तुनिष्ठ आधारों को स्पष्ट करें।

.....

.....

.....

.....

2) खेतिहर वर्गीय संरचना की तीन श्रेणियाँ कौन-कौन सी हैं?

.....

.....

.....

.....

3) औद्योगिक समाजों के वर्ग संघर्षों की तुलना कीजिए।

.....

.....

.....

.....

10.3 वर्गीय संरचना के सिद्धांत

अभी तक हमने वर्गीय संरचना के ऐतिहासिक पक्षों की विवेचना की है, जैसे कि वर्गों का निर्माण कैसे हुआ और विभिन्न संदर्भों में वे किस प्रकार विकसित हुए। अब हम वर्गीय संरचना के बारे में अपनी समझ में वृद्धि के लिए वर्गों और वर्ग संघर्ष संबंधी सिद्धान्तों का अध्ययन करेंगे। सिद्धान्त के क्षेत्र में मार्क्सवादियों और ग़ैर-मार्क्सवादियों के बीच भयानक असहमति है। कुछ की राय में वर्ग का संबंध संपत्ति से तो दूसरों की राय में शक्ति से हैं। कुछ अन्य भी हैं जो संवर्ग, संपत्ति और मूल्यों को परस्पर संबंधित मानते हैं। कुछ अन्य लोग वर्ग का संबंध वर्गीय चेतना से जोड़ते हैं।

विकासशील पूँजीपति वर्ग के तथा कामकाजी जनता से उसके संबंध के अध्ययन की आवश्यकता पर जोर देने के कारण मार्क्सवादी परंपरा आज भी उतनी ही उपयोगी है, खासकर जबकि पूँजीवादी उत्पादन का भूमंडलीकरण हो रहा है। लेकिन मार्क्सवादी वर्गों से भिन्न दूसरे सामाजिक समूहों पर कम ही ध्यान देते हैं। **व्यापक वर्गीय समूहों के अंदर सामाजिक गतिशीलता और सामाजिक विखंडन** पर जोर देने वाली वेबरवादी परंपरा की अंतःदृष्टि सिद्धान्त संबंधी कुछ कमियों को पूरा करती है। उत्तर-औद्योगिक सिद्धान्त बेरोज़गार समूहों के अस्तित्व पर रौशनी डालते हैं। वे एक अलग वर्ग के रूप में ऐसे बेरोज़गार समूहों की पहचान करने के प्रयास करते हैं जिनकी अपनी अनोखी आर्थिक स्थिति होती है। ये सिद्धान्त बेरोज़गार समूहों की पहचान मज़दूर वर्ग के एक भाग के रूप में ही करते हैं।

10.3.1 मार्क्सवादी सिद्धांत

मार्क्स के अनुसार एक वर्ग तभी बनता है जब वह **अपने वर्गीय हितों की रक्षा के लिए एकजुट और संगठित** होता है। **साझे संघर्ष के बिना** वह ऐसे जनसमूह से अधिक कुछ भी नहीं जिसकी आर्थिक व्यवस्था में एक जैसी स्थिति हो। पूँजीपति वर्ग ने अपनी वर्गीय चेतना का विकास इस तरह किया कि सामंतवाद से संघर्ष के दौरान उसमें अपने सदस्यों के साझे हितों की जागरूकता थी। पूँजीवाद समाज का शासक वर्ग मौजूदा व्यवस्था की रक्षा की साझी आवश्यकता को भी समझता है। हालांकि यह वर्ग अनेक आंतरिक, गिरोहबंद टकरावों के कारण बंटा हुआ है।

सर्वहारा के लिए एक वर्ग होने की चेतना पाने का संघर्ष एक लम्बी प्रक्रिया है। जैसा कि **कम्युनिस्ट घोषणापत्र** में कहा गया है, अपने जन्म के समय से ही सर्वहारा पूँजीपति वर्ग से संघर्ष करता आया है। लेकिन आरंभ में स्थानीय शोषकों के तथा स्थानीय पूँजीपतियों के खिलाफ केवल छिटपुट, स्थानीय संघर्ष ही चले। उद्योगों के विकास के साथ सर्वहारा वर्ग की संख्या बढ़ती है तथा वह अधिकाधिक केन्द्रित होता जाता है। पूँजीपति वर्ग के साथ सर्वहारा वर्ग के टकराव धीरे-धीरे दो वर्गों के टकरावों का रूप लेते जाते हैं। मज़दूर संगठित होने लगते हैं; वे गठजोड़ और स्थायी संगठन बनाने लगते हैं। स्थानीय संघर्ष केन्द्रीकृत होकर वर्गों के बीच एक राष्ट्रीय संघर्ष का रूप ले लेते हैं। पूँजी के दृष्टिकोण से मज़दूरों का समूह पहले ही एक वर्ग था लेकिन सर्वहारा संघर्ष के दौरान ही 'निज-हेतु' एक वर्ग बनता है। वर्ग से वर्ग का संघर्ष एक राजनीतिक संघर्ष होता है।

संघर्ष में ही **सर्वहारा अपनी वर्गीय चेतना को विकसित और व्यक्त करता है।** मार्क्स के लिए इसका बुनियादी अर्थ यह था कि सर्वहारा यह बात समझ लेता है कि उसकी अपनी मुक्ति तथा पूरे समाज की मुक्ति के लिए पूँजीवाद का विनाश आवश्यक है, और वह उसके

विकास की इच्छाशक्ति विकसित करता है। **सर्वहारा की वर्गीय चेतना एक क्रांतिकारी चेतना होती है**। सर्वहारा को विश्वास होता है कि समाज का क्रांतिकारी रूपातंरण आवश्यक है, और वह उसके लिए प्रतिबद्ध है। **मार्क्स** और **एंगेल्स** की राय में वर्गीय चेतना का अर्थ इसी सामान्य क्रान्तिकारी परिप्रेक्ष्य की चेतना है।

इसका यह मतलब बिल्कुल नहीं कि मज़दूर मार्क्सवादी सिद्धान्तों को दिलों में बिठाए हुए हैं। घोषणापत्र में मार्क्स और एंगेल्स ने कहा कि कम्युनिस्ट कोई अलग पंथ नहीं हैं, बल्कि वे हमेशा और हर जगह पूरे आंदोलन के हितों का प्रतिनिधित्व करते हैं। सर्वहारा का आंदोलन किस दिशा में बढ़ना चाहिए, इसके बारे में उनकी समझ सबसे उन्नत होती है। लेकिन उनका और दूसरी सर्वहारा पार्टियों का तात्कालिक उद्देश्य एक हैः एक वर्ग के रूप में सर्वहारा का रूपांतरण तथा पूँजीवादी प्रभुत्व की समाप्ति।

लेकिन मार्क्स एक बात बार-बार कहते हैंः 'मज़दूर वर्ग की मुक्ति स्वयं मज़दूर वर्ग का कार्य होना चाहिए।' मार्क्स को आशा थी कि **सर्वहारा स्वयं में आवश्यक क्रांतिकारी चेतना का विकास करेगा और स्वयं को मुक्त कराएगा**। इसलिए **मज़दूर वर्ग के क्रांतिकारी संघर्ष के लिए संगठन की** आवश्यकता है। ट्रेड यूनियनें और पार्टी मज़दूर वर्ग के संगठन के प्रमुखतम रूप हैं।

लेकिन इतिहास में क्या हुआ? भारी कठिनाई औद्योगिक मज़दूरों की इस स्पष्ट असफलता से पैदा हुई कि वे अनुमानित ढंग से कोई उल्लेखनीय प्रगति नहीं कर सके। वर्ग के सिद्धान्त से पैदा भविष्यवाणियों तथा ऐतिहासिक विकासक्रम की वास्तविक प्रवृत्ति का अंतर बहुत साफ तौर पर 1917 में रूस की अक्टूबर क्रांति से स्पष्ट हुआ। **इस विरोधाभास पर गौर करें**। *समाजवादी रूपांतरण के मार्क्सवादी वचन को पूरा करने का दावा करने वाली क्रांति एक ऐसे समाज में हुई जहाँ पूँजीवादी विकास बहुत कम हुआ था, जबकि औद्योगिक मज़दूरों की बड़ी आबादियों वाले सचमुच पूँजीवादी देशों में समाजवादी क्रांति के सारे प्रयास असफल रहे।* सिद्धान्त के परिप्रेक्ष्य में जो चीज एक हैरान करने वाली असंगति या इतिहास का विरोधाभास दिखाई पड़ती थी, उसने मार्क्सवादी विचारकों में और अधिक रुचि पैदा की। उनका सरोकार यह था कि पहले का अनुमान साकार क्यों नहीं हुआ।

ये सिद्धांतकार कौन थे और उन्होंने क्या काम अंजाम दिए, इसका अध्ययन हम नीचे के अनुच्छेदों में करेंगे।

इन सिद्धान्तकारों में पहले व्यक्ति लुकास थे। उनके 'मिथ्या चेतना' के सिद्धान्त ने 'वर्ग की चेतना' और 'वर्गीय चेतना' में अंतर किया। पहले का संबंध वर्ग के सदस्यों के उन विचारों और उत्प्रेरकों से हैं जो उनकी दैनिक जीवन संबंधी अनुभवहीनता से पैदा होते हैं। दूसरे का विकास उस सामाजिक प्रणाली से संबंधित सूचनाओं की समग्रता का एक बुद्धिसंगत अध्ययन करके और उसके बाद ही किया जा सकता है जिसके वे सदस्य हैं। **लुकास** की राय में पहले से दूसरे में संक्रमण स्वतः नहीं होता, आदर्श 'वर्गीय चेतना' के निर्माण के लिए आवश्यक सूचना वैयक्तिक अनुभव के अंदर उपलब्ध नहीं होती क्योंकि वह अनुभव रोजमर्रा के जीवन-रक्षा के कार्यों से बाधित होता है। केवल वर्ग के सदस्यों के राजनीतिक संगठन द्वारा किया गया एक वैज्ञानिक विश्लेषण ही वर्गीय चेतना पैदा कर सकता है। यहीं आकर विचारधारा की एक सक्रिय भूमिका हो जाती है।

इसी से जुड़ी एक और बहस में मार्क्सवादी वर्षों तक उलझे रहे हैं। इसका संबंध मज़दूर वर्ग की संरचना से है। वर्ग की व्याख्या के लिए **निकोलस पोलंतज़ास** ने एक व्यापक ढांचा तैयार किया और यह निष्कर्ष निकाला कि मज़दूर वर्ग पूरी तरह उत्पादक, अधीनस्थ, हाथ से मेहनत करने वाले उज़रती मज़दूरों से बना होता है। जहाँ उत्पादक श्रम अतिरिक्त मूल्य

पैदा करता है वहीं अनुत्पादक श्रम, मिसाल के लिए सरकारी कर्मचारियों, सेवाकर्मियों या प्रशासकों को इसी स्रोत से भुगतान किया जाता है।

10.3.2 वेबरवादी सिद्धान्त

इस भाग में हम केवल मैक्स वेबर नहीं, उनकी परंपरा का अनुसरण करने वाले विचारकों, जैसे **एंथनी मिडिंस**, के विचारों का भी अध्ययन करेंगे।

मैक्स वेबर ने सिर्फ वर्ग का सिद्धान्त प्रस्तुत नहीं किया बल्कि दो अन्य धारणाएँ भी प्रस्तुत कीं, अर्थात् स्थिति समूह (स्टेटस ग्रुप) और पार्टी की धारणाएँ। उनकी राय में वर्ग ऐसे लोगों का समूह है जिनकी वस्तुगत स्तर पर, बाज़ार में स्थिति या बाज़ार की शक्ति की दृष्टि से, एक जैसी स्थिति होती है। तात्पर्य यह है कि इन लोगों को जीवन के एक जैसे अवसर प्राप्त होते हैं। इसका निश्चय उन संसाधनों के उपयोग की शक्ति से होता है जिन पर बाज़ार में आय पाने के लिए उनका नियंत्रण होता है। वेबर ने 'जीवन के अवसर' (लाइफ चांसेज) शब्दों का प्रयोग केवल भौतिक लाभों के लिए नहीं बल्कि तमाम वांछित वस्तुओं के लिए किया है, जैसे अवकाश, यात्रा, संस्कृति आदि। वेबर मानते हैं कि संपत्ति के वितरण का ढर्रा वर्ग की संरचना के मूलभूत और आम आधारों में एक है। लेकिन वेबर की राय में संपत्ति का स्वामित्व या अस्वामित्व किसी वर्गीय स्थिति का मात्र एक मानदंड होता है। **स्वामित्व वाली संपत्ति के प्रकार** या **पेश की जाने वाली कुशलता या सेवा** के आधार पर वर्गों में आगे भी विभाजन होते हैं।

वर्ग और स्थिति समूह का आपस में गहरा संबंध होता है। वेबर कहते हैं कि वर्गीय स्थिति को निरूपित करने के अलावा संपत्ति का प्रयोग अक्सर एक स्थिति समूह की सदस्यता के मानदंड के रूप में भी किया जाता है। आम तौर पर स्थिति को एक सुस्पष्ट जीवन-शैली तथा ग़ैर-सदस्यों से सामाजिक अंतःक्रिया संबंधी प्रतिबंधों को रूप में व्यक्त किया जाता है। बोलचाल का ढंग, वस्त्र, आचार-विचार, आवास, आदतें, अवकाशकालीन कार्यकलाप, विवाह के ढर्रे -- ये सब स्थिति के भेदों की अभिव्यक्तियाँ हो सकते हैं। **वेबर** की राय में एक स्थिति समूह वांछित वस्तुओं को पाने के लिए कुछ विशेष अधिकारों, विशेषाधिकारों और अवसरों से संपन्न समूह होता है। इनका निर्धारण बाज़ार में समूह की स्थिति से नहीं बल्कि कुछ विशेषताओं से होता है जिनका मूल्यांकन क्षमता, प्रतिष्ठा, स्वीकार्यता आदि के आधार पर होता है।

वेबर का कथन है कि *वर्ग और स्थिति समूह, दोनों मूलतः शक्ति पर आधारित होते हैं। वे पार्टी की परिभाषा बहुत व्यापक अर्थ में करते हैं कि यह ऐसा कोई समूह है जिसका उद्देश्य समाज में शक्ति का व्यवहार करना हो तथा जिसका सरोकार शक्ति पाने की प्रतियोगिता से हो।* यह राजनीतिक दलों के प्रचलित अर्थ से अधिक व्यापक एक धारणा है और इसमें ऐसा कोई भी गठजोड़ या संगठन आ जाएगा जिसका उपरोक्त उद्देश्य हो। एक पार्टी का संबंध किसी विशेष वर्ग या स्थिति समूह से हो सकता है, पर यह कोई आवश्यक नहीं। उपजाति, नस्ल, धर्म या क्षेत्र समेत कोई भी सामाजिक विभाजन एक पार्टी का आधार हो सकता है। हालांकि हो सकता है कि वर्ग, स्थिति और शक्ति एक दूसरे की सीमाओं का अतिक्रमण करें, पर आमतौर पर किसी विशेष प्रकार के समाज में इनमें से किसी एक की प्रधानता होती है।

एंथनी गिडिंस ने मूलतः वेबरवाद को ही अपनी धारणा का आधार बनाया है। गिडिंस, मार्क्स और वेबर दोनों की तरह वर्ग और आर्थिक क्षेत्र के बीच एक संबंध बनाए रखना चाहते हैं। सामान्य अर्थ में वर्गों की परिभाषा ऐसे बड़े, समाजव्यापी समूहों के रूप में की जा सकती

है जो, कम से कम सिद्धान्त के स्तर पर, 'खुले' हों। तात्पर्य यह कि जन्म, वंशगत स्थिति आदि इसकी सदस्यता का निर्धारण नहीं करते। गिडिंस केवल युद्ध आर्थिक दृष्टि से परिभाषित श्रेणियों की बजाय जिसे वे 'सामाजिक वर्ग' कहते हैं उसको परिभाषित करने के प्रयास करते हैं। कारण कि विभिन्न बाज़ारी क्षमताओं से उत्पन्न हितों की बहुलता अनंत हो सकती हैं जबकि सामाजिक वर्गों की संख्या सीमित ही होती है।

उनकी राय में समकालीन समाज में बुनियादी तौर पर तीन वर्ग हैं -- उच्च, मध्य तथा निम्न या मज़दूर वर्ग।

वर्गीय संरचना की दृष्टि से आधुनिक पूँजीवाद में श्रम-विभाजन का सबसे महत्वपूर्ण पक्ष वह है जो प्रशासनिक और शारीरिक कार्यों के बीच पाया जाता है। सफेदपोश और सियाहपोश समूहों के काम बहुत भिन्न-भिन्न होते हैं तथा हरेक के पास उपयुक्त कुशलताएँ होती हैं।

दूसरे, उद्यम में सत्ता (अथारिटी) के संबंधों का ढर्रा इस श्रम-विभाजन को बल प्रदान करता है। सफेद-पोश कामों से अक्सर कुछ सत्ता जुड़ी होती है जबकि सियाहपोश कामों से आम तौर पर नहीं होती और ये काम अक्सर सत्ता के अधीन होते हैं। तीसरे, उपभोग के विभिन्न ढर्रे और विभिन्न जीवन-शैली के ये अलग-अलग ढर्रे जहाँ तक विभिन्न समूहों से जुड़े होते हैं, वहाँ तक उन्हें गिडिंस वितरणमूलक समूह बतलाते हैं। वितरणमूलक समूहों के लिए आधार का काम करने वाले इन उपभोग के भिन्न-भिन्न ढर्रों की प्रतिष्ठा जहाँ अलग-अलग होती है, वहीं यहाँ केन्द्रीय मानदंड खुद उपभोग का वास्तविक ढर्रा ही होता है। वर्गीय संबंधों की संरचनाओं के तीन प्रकार जिस सीमा तक एक दूसरे पर आरोपित होते हैं तथा वे वर्गीय संबंधों की मध्यवर्ती संरचना के साथ-साथ जिस सीमा तक चलते हैं, उस सीमा तक विभिन्न वर्गों के निर्माण को बढ़ावा मिलता है।

अंतिम बात। एक सामाजिक वास्तविकता बनने के लिए आवश्यक है कि एक वर्ग व्यवहार व दृष्टिकोण के साझे प्रतिमान अपनाए। इसके लिए स्वयं के एक वर्ग होने के प्रति सजग होना पड़ेगा।

दूसरे वेबरवादी सफेदपोश व्यवसायों की विविधता को स्वीकार करते हुए शारीरिक और मानसिक काम के अंतर को महत्वपूर्ण मानते हैं।

जान गोल्डथार्प एक 11 वर्गों का मॉडल प्रस्तुत करते हैं। लेकिन उनका सुझाव यह है कि इन 11 वर्गों को तीन वर्गों में श्रेणीबंद किया जा सकता हैः सेवाकर्मी वर्ग, मध्यवर्ती वर्ग और मज़दूर वर्ग।

सेवाकर्मी वर्ग में प्रबंधक, प्रशासक और पेशेवर (वेतन भोगी अभिजात) तथा 'बड़े संपत्ति-स्वामी' भी आ जाते हैं। सेवाकर्मी वर्ग के नीचे मध्यवर्ती श्रमिकों का एक कम सुगठित समूह आता है जिसमें **गोल्डथार्प** छोटे संपत्ति-स्वामियों, किसानों, मिस्त्रियों, अशारीरिक श्रम करने वाले श्रमिकों या सेवाकर्मी श्रमिकों को शामिल करते हैं। इनमें से अनेक समूहों को मार्क्सवादी सर्वहारा के अंग मानते हैं। जहाँ गोल्डथार्प और दूसरे नव-वेबरवादियों का कथन है कि काम और बाज़ार में मध्यवर्ती समूहों की सुस्पष्ट स्थितियाँ होती हैं, वहीं वे इस समूह की अपक्षय प्रकृति को भी स्वीकार करते हैं और इस तथ्य को भी कि इन व्यावसायिक क्षेत्रों से व्यक्ति बाहर जाते और इसमें आते रहते हैं। अमेरिका और कनाडा के साक्ष्यों से पता चलता है कि निचली श्रेणियों की नौकरियों में अपनी जीवनवृत्ति का आंरभ कर रहे युवक और छात्र भरती होते हैं जो हो सकता है अंततः सेवाकर्मी वर्ग तक पहुँच जाएँ। दूसरी ओर कुछ यूरोपी समाजों में ये नौकरियाँ अपेक्षाकृत आयु के श्रमिक स्वीकार करते हैं।

बोध प्रश्न 2

टिप्पणीः क) नीचे दिए गए स्थान में अपने उत्तर लिखिए।

ख) इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों के साथ अपने उत्तरों को मिलाइए।

1) सर्वहारा की वर्गीय चेतना से क्या अभिप्राय है?

.....

.....

.....

.....

2) वेबरवादी सिद्धान्त में 'स्थिति समूह' क्या है?

.....

.....

.....

.....

3) गिडिंस के अनुसार वर्ग क्या होता है?

.....

.....

.....

.....

4) गोल्डथार्प के अनुसार तीन वर्ग कौन-कौन से हैं?

.....

.....

.....

.....

10.4 नए विकासक्रम

1970 के दशक के बाद अनेक विकसित समाजों में असमानताएँ व्यापक रूप से बढ़ी हैं। प्रौद्योगिक प्रवर्तन (इनोवेशन) के कारण एक विशेष परिमाण में उत्पादन के लिए अब पहले से कम व्यक्तियों की आवश्यकता पड़ती है। मिसाल के लिए ब्रिटेन में निचले दर्जे की नौकरियाँ, जो पिछले दो दशकों में व्यावसायिक प्रसार का प्रमुख स्रोत रही हैं, कुल मिलाकर कम वेतन दिलाती हैं, अंशकालिक होती हैं और अक्सर अस्थायी होती हैं। अमेरिका में एक मज़दूर के लिए अपने ही वर्ग में ऊपर उठने या उठकर किसी और वर्ग

में पहुँचने के लिए यूरोप से अधिक अवसर प्राप्त हैं, और उसकी सामाजिक स्थिति को अधिक आदर दिया जाता है।

आज जबकि परंपरागत मज़दूर वर्ग तेज़ी से अपनी क्रांतिकारी क्षमता खोता जा रहा है, एक क्रांतिकारी वर्ग की तलाश में अनेक मार्क्सवादी भी दूसरी ओर निगाह दौड़ाने लगे हैं। परंपरागत मज़दूर वर्ग के पूँजीवादीकरण के कारण कुछ तो परवर्ती पूँजीवाद के तकनीशियनों/अभियंताओं/कंप्यूटर विशेषज्ञों की ओर देखने लगे हैं। कुछ 1968 और उसके बाद के सक्रिय छात्रों में क्रांतिकारी गुण तलाश कर रहे हैं। लेकिन सबसे दूरगामी मोड़ तीसरी दुनिया के उत्पीड़ित जनगणों की ओर निगाह करना था। अगर पश्चिम का मज़दूर वर्ग कमज़ोर और भ्रष्ट हो चुका है वे समझते है कि तीसरी दुनिया के दुबले-पतले और भूखे किसान शहरों को घेरेंगे और सपनों की दुनिया में ले जाएँगे।

लेकिन कुछ तो तीसरी दुनिया के मज़दूरों तक को 'श्रमिक अभिजात वर्ग' मानते हैं जो बिका हुआ और सुधारवादी हैं। वे शहरों की झुग्गी-झोंपड़ियों के 'सीमांत जन' के उपनगर क्रांतिकारी को 'क्रांतिकारी' परियोजना का संभावित रक्षक मानते हैं। उत्तर-मज़दूर वर्ग कर्ताओं की संख्या बढ़ते जाने के कारण कुछ वामपंथियों तक ने 'वर्ग से पीछे हटने' की प्रवृत्ति को रोकने की बात की। ***अर्नेस्तो लैक्लो*** और **शंतल मूफ** जैसे उत्तर-मार्क्सवादी सिद्धान्तकारों ने समकालीन सामाजिक संघर्षों की बहुलता तथा राजनीति की असंबद्ध प्रकृति पर जोर दिया है।

ये नए विकासक्रम आज के पूँजीवाद की विविधता और सामाजिक संघर्षों की बहुलता के संकेत हैं। यहाँ वर्ग के साथ और उससे जुड़ा हुआ नस्ल, लिंग, यौन-वृत्ति, धर्म, विकलांगता और क्षेत्र, सब कुछ है। लगता है कि सामाजिक रूपांतरण का कोई नया केन्द्र या स्थान नहीं है। दमन अनेकों प्रकार के हैं तथा प्रतिरोध हर जगह हो रहा है। रूपांतरण की क्षमता एक परिकल्पित सर्वहारा, या किसी और कर्ता के हाथों में केन्द्रित नहीं है बल्कि पूरे समाज में बिखरी हुई है।

ये ही विषय हैं जिन्हें 1980 के दशक के 'नए' सामाजिक आंदोलन - शांति आंदोलन, पर्यावरण आंदोलन और सबसे बढ़कर महिला आंदोलन - उठाने लगे है। जाहिर है कि औद्योगिक से उत्तर-औद्योगिक समाज में होने वाले संक्रमण ने एक नए सामाजिक टाइप को जन्म दिया है। वितरण संबंधी पुराने टकरावों की जगह अस्मिता (आइडेंटिटी) और समाज के गुणात्मक रूपांतरण जैसे नए सरोकार जन्म लेने लगे हैं। एक तरह से कहें तो अर्थव्यवस्था पर जोर की जगह संस्कृति पर जोर दिया जाने लगा है। इन 'नए' सामाजिक आंदोलनों को शत्रुता के उन नए रूपों का प्रत्युत्तर समझा जाने लगा जो परवर्ती पूँजीवाद में पैदा हुए।

ब्राजील और दक्षिण अफ्रीका जैसे देशों में, यहाँ तक कि अमेरिका में भी, 'नए संघवाद' की कार्य पद्धतियाँ और रणनीतियाँ फल-फूल रही हैं। यूनियन के अंदर लोकतांत्रिक तौर-तरीकों, लैंगिक समानता तथा परिमाणात्मक की जगह गुणात्मक रणनीतियों संबंधी सरोकार अब पहले से बहुत अधिक आम हैं। राज्य पर केन्द्रित पुरानी रणनीतियों की जगह अब नागरिक समाज की ओर रुझान पहले से बहुत अधिक है। ट्रेड यूनियनें अब यह स्वीकार करने लगी हैं कि मज़दूर वर्ग में दो लिंग हैं और यह कि अतिसरण सूत्रों के सहारे नस्ल (रेस) पर पर्दा नहीं डाला जा सकता।

और हाल के वर्षों में **भूमंडलीकरण** के विषय ने मज़दूर वर्गों के आलोचनात्मक अध्ययन पर सबसे अधिक प्रभाव डाला है। एक अंतर्राष्ट्रीय स्तर से ऊपर उठकर आर्थिक संबंध सही अर्थों में भूमंडल व्यापी बन चुके हैं। यह एकीकरण की एक प्रक्रिया है जो काम की दुनिया

पर दूरगामी प्रभाव डाल रही है। जैसा कि मार्क्स ने भविष्यवाणी की थी, पूँजी ने रास्ते में बाधक बननेवाली सभी राष्ट्रीय सीमाओं को परे कर दिया है। पूँजीवाद पूरे भूमंडल के आर्थिक, सांस्कृतिक और सामाजिक, सभी क्षेत्रों में व्याप्त हो चुका है। नए 'भूमंडलीय कारखानों' में मज़दूर फिर एक बार मात्र माल बनकर रह गए हैं।

भूमंडलीकरण के साथ-साथ पूँजी प्रौद्योगिकी के एक नए क्षेत्र में कूदकर जा पहुँची है जहाँ सूचना और ज्ञान का साम्राज्य है। उन्नत सूचना प्रौद्यागिकी तथा उससे उत्पन्न काम के पुनर्गठन के कारण और भी पेचीदा ढंगों से कार्य स्थल का विकेंद्रीकरण हो रहा है। हम जहाँ काम करते हैं वह 1980 के दशक तक नजर आने वाले कार्यालय-समूहों और उत्पादन-स्थलों से अधिक बिखरा हुआ है। उद्यम के अंदर यह नया विकेंद्रित कार्यस्थल भी आंतरिक प्रभाव डाल रहा है क्योंकि सोपान (हायरार्की) की जगह अब **नेटवर्क** लेने लगा है।

डेनियल बेल, जान गोल्डथार्प और एलन तोरेन ने 'ज्ञान और वृत्ति' के क्षेत्र के विकास का वर्णन किया है। इसमें शिक्षक, वैज्ञानिक, पेशेवर व्यक्ति, प्रशासक और प्रबंधक शामिल हैं। इस क्षेत्र की तीव्र संवृद्धि ने नए 'सेवाकर्मी' या 'ज्ञान-संपन्न' वर्ग के जन्म की दशाएँ पैदा की हैं। यह वर्ग अपने राजनीतिक हितों को किस प्रकार निरूपित, संगठित और व्यक्त करेगा, इसके बारे में अलग-अलग विचार हैं। **तोरेन** का तर्क है कि यह नया वर्ग पुराने मज़दूर वर्ग से एक गठजोड़ कायम कर सकता है। वहीं **गोल्डथार्प** इस बात पर जोर देते हैं कि इस नए वर्ग के व्यक्तियों के हित उत्पादन-प्रक्रिया में उनकी स्वायत्तता की ओर उन्मुख हैं और इसलिये ये हित सियाहपोश मज़दूरों के हितों के विरोधी हैं। 1980 व 1990 के दशकों के साक्ष्यों से संकेत मिलता है कि उत्तर-औद्योगिक समाज वास्तव में विविध हितों वाले विविध नए समूहों को जन्म दे रहा है, सामान्यतः वर्गीय संबंधों को कमज़ोर बना रहा है तथा औद्योगिक वर्गीय टकरावों को एक नए प्रमुख टकराव से विस्थापित किए बग़ैर उनको महत्वहीन बना रहे हैं।

बोध प्रश्न 3

टिप्पणीः क) नीचे दिए गए स्थान में अपने उत्तर लिखिए।

ख) इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों के साथ अपने उत्तरों को मिलाइए।

1) 'नए' सामाजिक आंदोलन कौन-कौन से हैं?

.....

.....

.....

.....

2) मज़दूर वर्गों पर भूमंडलीकरण के क्या प्रभाव पड़ रहे हैं?

.....

.....

.....

.....

10.5 साराश

प्रस्तुत इकाई में पहले हमने वर्गीय संरचना के इतिहास की विवेचना की और फिर यह देखा कि वर्ग क्या है और इस बारे में कुछ विचारकों के क्या-क्या विश्लेषण हैं। वर्गीय संरचना के विभिन्न सिद्धान्तों, जैसे वेबरवादी, मार्क्सवादी और उत्तर-औद्योगिक सिद्धान्तों की विवेचना की गई। नई वर्गीय संरचनाओं को प्रभावित करने वाले नए विकासक्रमों की चर्चा भी की गई। जहाँ वर्गीय संरचना के विभिन्न सिद्धान्तों के बीच तीखे मतभेद मौजूद हैं, वहीं वर्ग का मुद्दा आज भी प्रासंगिक है क्योंकि उत्तर-औद्योगिक युग तक में सभी समाजों में भारी असमानताएँ दिखाई पड़ रही हैं। खेतिहर और औद्योगिक वर्गीय संरचनाएँ वर्गों की जारी प्रासंगिकता के संकेत देती है हालांकि बहुत से दूसरे नए विकासक्रम स्थिति और संस्कृति जैसे नए तत्वों की बढ़ती हुई भूमिका के संकेत देते हैं।

10.6 शब्दावली

जीवन के स्तर : यह विचार है कि समाज में भौतिक प्रतिदान और ऊँची स्थिति पाने के बारे में किसी व्यक्ति की संभावनाएँ उसकी वर्गीय स्थिति से प्रभावित होती हैं।

बुर्जुबाजी : इसे पूँजीपति वर्ग (कैपिटलिस्ट क्लास) भी कहते हैं। यह उत्पादन के साधनों का स्वामी होता है, मज़दूरी पर मज़दूरों से काम लेता है और मुनाफा इसकी आय का स्रोत होता है।

वर्ग : वह समूह जो उत्पादन के साधनों से अपने आर्थिक संबंधों के आधार पर बनता है।

वर्ग संघर्ष : उत्पीड़कों और उत्पीड़ितों का ऐतिहासिक टकराव।

वर्गीय चेतना : एक विशेष वर्ग के सदस्य होने की जागरूकता तथा उस वर्ग के राजनीतिक हितों का सचेतन ज्ञान।

सर्वहारा : मज़दूर वर्ग जो मालों का उत्पादन करता है तथा मज़दूरी के रूप में आय अर्जित करता है।

स्थिति (स्टेट्स) : एक समाज में किसी व्यक्ति का सामाजिक पद या प्रतिष्ठा।

10.7 कुछ उपयोगी पुस्तकें

एलिंग - एंडरसन, जी (1993) : *चेंजिंग क्लासेज*, लंदनः सेज।

गिडिंस, ए (1973) : *द क्लास स्ट्रक्चर ऑफ द एडवांस्ड सोसायटीज*, लंदन : हचिंसन।

गोल्डथार्प, जे. एच. (1982) : *सोशल मोबिलिटी एंड क्लास स्ट्रक्चर इन माडर्न ब्रिटेन*, आक्सफर्ड क्लैरेंडन प्रेस।

पोलांजा, एन (1978): *क्लासेज इन कंटेंपोरेरी कैपिटलिज्म*, लंदनः वर्सो।

बेल, डी. (1974) : *द कमिंग आफ द पोस्ट-इंडस्ट्रियल सोसायटी : ए वेंचर इन सोशल फोरकास्टिंग*, न्यूयार्कः बेसिक बुक्स।

राइट, ई ओर (1985) : *क्लासेज*, लंदन : वर्सो।

हैमिल्टन, एम. और हर्त्सोवित्ज (1993) : *क्लास एंड इनइक्वैलिटीः कंपेरेटिव पर्सपेक्टिव्स*, न्यूयार्क, हर्विस्टर व्हीटशीफ।

10.8 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

1) वर्ग के वस्तुनिष्ठ आधारों में उत्पादन के साधनों का स्वामित्व या अस्वामित्व, जीवन स्तर, सांस्कृतिक और मनोरंजन संबंधी संभावनाएँ शामिल हैं।

2) खेतिहर वर्गीय संरचना, उदाहरण के लिए, गृहयुद्ध से पहले के अमेरिका में **दास-प्रथा** पर, मध्यकालीन यूरोप और उपनिवेशी लैटिन अमेरिका में **सामंती व्यवस्थाओं** पर तथा दक्षिण-पूर्व एशिया के उपनिवेशी क्षेत्रों में **कृषक पूँजीवाद** पर आधारित रही हैं।

3) रूस, फिनलैण्ड और जर्मनी में जहां विरोध का दमन करके अभिजात वर्ग सत्ता से चिपके हुए थे, तीखी वर्गीय टकराव हुए। दूसरी ओर इंग्लैण्ड और स्विटज़रलैण्ड जैसे लोकतंत्रों में वर्गीय टकराव कम हिंसक रहा क्योंकि विभिन्न अधिकारों और स्वतंत्रताओं ने मज़दूरों को यह अवसर दिया कि वे वैध उपायों से अपनी माँगे मनवाने के लिए दबाव डाल सकें।

बोध प्रश्न 2

1) मार्क्स की राय में सर्वहारा अपनी वर्गीय चेतना को संघर्ष के दौरान ही विकसित और व्यक्त करता है। संयुक्त प्रयास से समाज का रूपांतरण आवश्यक है, यह आस्था सर्वहारा को एक क्रांतिकारी परिप्रेक्ष्य प्रदान करती है।

2) स्थिति समूह ऐसे व्यक्तियों का समूह है जिनके पास जो कुछ वांछित है उसे पाने के लिए संपत्ति या समाज में प्रतिष्ठा के कारण कुछ विशेष अधिकार, विशेषाधिकार और अवसर होते हैं।

3) वर्ग बाज़ार में मिलती-जुलती स्थिति वाले व्यक्तियों का समूह होता है। जन्म, वंशगत स्थिति आदि एक वर्ग की सदस्यता का निर्धारण नहीं करते।

4) सेवाकर्मी वर्ग में प्रबंधक, प्रशासक और पेशेवर व्यक्ति आते हैं। दूसरे, मध्यवर्ती श्रमिक समूह में छोटे संपत्ति-स्वामी, कृषक, मिस्त्री, अशारीरिक श्रम करने वाले व्यक्ति या नौकरीपेशा व्यक्ति आते हैं। आखिरी वर्ग शारीरिक श्रम करने वाले मज़दूर वर्ग का है।

बोध प्रश्न 3

1) ये नए सामाजिक आंदोलन शत्रुता के उन नए रूपों के प्रत्युत्तर हैं जो परवर्ती पूँजीवाद में पैदा हुए। शांति, पर्यावरण और महिला आंदोलन इन नए सामाजिक आंदोलनों के विभिन्न विषय हैं।

2) आर्थिक संबंध एक अंतर्राष्ट्रीय स्तर से आगे बढ़कर सही अर्थों में भूमंडलव्यापी बन चुके हैं। नए 'भूमंडलीय कारखानों' में पिछले युगों की तरह मज़दूर फिर एक बार मात्र माल बनकर रह गए हैं।